सुनहरी मछली

रूसी लोककथा

चित्र: आर. वोल्स्की

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

बहुत पुराने समय पहले, एक बूढ़ा मछुआरा और उसका इकलौता बेटा समुद्र के किनारे रहते थे. वे बहुत गरीब थे, क्योंकि उनके पास केवल एक पुरानी नाव और एक मछली पकड़ने का जाल था. वो लड़का पूरे दिन काम करता था और अपने पिता की मदद करता था, साथ में युवा मछुआरा पूरे दिन मधुर गीत गाता रहता था.

एक बार बूढ़े आदमी ने हमेशा की तरह अपना जाल समुद्र में डाला. जब उसने उसे खींचा तो देखा कि उसमें एक मछली छटपटा रही थी, लेकिन वो कोई साधारण मछली नहीं थी: वो एक सुनहरी मछली थी.

बूढ़ा बहुत आश्चर्यचकित हुआ. "बेटे देखो, मैं खान को इसके बारे में बताने जा रहा हूं. तब तक इस अद्भुत मछली पर अपनी नजर रखना." उसने अपने बेटे से कहा, "खान हमें उस मछली के लिए अच्छा इनाम दे सकता है."

और फिर बूढ़ा आदमी तुरंत चला गया.

युवा मछुआरा उस सुनहरी मछली को जाल में इतनी बुरी तरह से संघर्ष करते हुए नहीं देख सका और उसने मछली को छोड़ दिया.

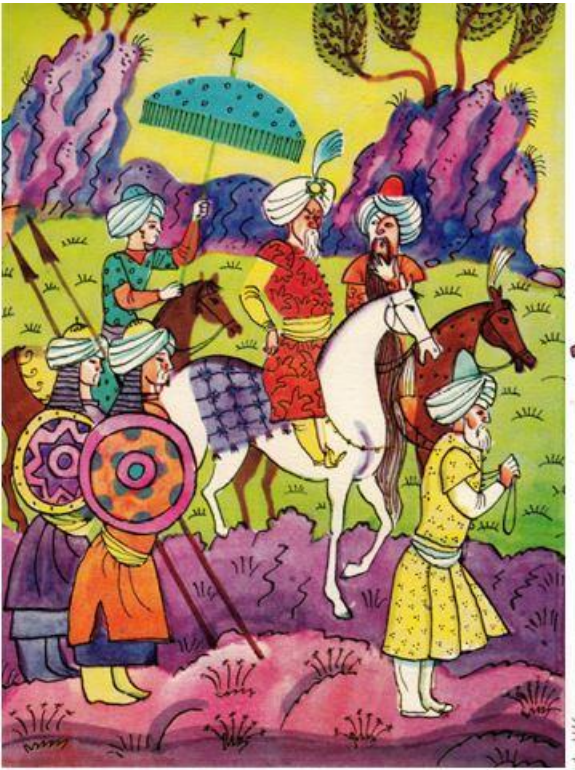

सुनहरी मछली ने अपनी पूंछ घुमाई और वो लहरों के नीचे गायब हो गई.

जल्द ही खान वहां आया. उसके पीछे उसके परिचारक और अंगरक्षक सवार भी आए.

"तुम्हारी अद्भुत मछली कहां है? जरा हम उसे देखें," खान ने कहा.

युवा मछुआरे ने अपना सिर झुका लिया और जवाब दिया, "मैं उस सुंदर मछली को छटपटाते हुए नहीं देख पाया और मैंने उसे छोड़ दिया."

इससे खान बहुत गुस्सा हुआ. "बूढ़े, तुम बड़े बद्तमीज़ हो!" वो बूढ़े मछुआरे पर चिल्लाया. “तुमने और तुम्हारे निकम्मे बेटे ने मेरी शाही नींद हराम करने की ज़ुर्रत कैसे की? अल्लाह के सबसे प्यारे बेटे, यानि मेरे साथ छल करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? देखो, कभी किसी ने सुनहरी मछली को समुद्र में तैरते हुए नहीं देखा है!”

इस पर खान के वजीर ने अपनी लंबी दाढ़ी हिलाई. दाढ़ी इतनी लंबी थी कि वो जमीन पर घिसट रही थी. उसने कहा, "मैं सौ साल का हो गया हूं, फिर भी मैंने ऐसे आश्चर्य के बारे में पहले कभी नहीं सुना है."

बूढ़े मछुआरे ने खान से सुनहरी मछली पर विश्वास करने की विनती की, लेकिन सुनहरी मछली के बारे में सारी बातचीत ने खान को और भी क्रोधित कर दिया. अंत में, खान ने युवा मछुआरे के हाथ-पैर बांधकर मछुआरे की पुरानी नाव में समुद्र में ले जाने का आदेश दिया.

खान बहुत प्रसन्न हुआ और वो अपने महल में वापिस लौट गया. इस बीच, गरीब बूढ़ा मछुआरा समुद्र के किनारे खड़े होकर लहरों को अपने इकलौते बेटे को दूर, और दूर समुद्र में ले जाते हुए देख रहा था. उसे नहीं पता था कि वो क्या करे, और अपने बेटे को कैसे बचाये.

जब आख़िरकार नाव नज़रों से ओझल हो गई, तो बूढ़ा मछुआरा गम से ज़मीन पर गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा और क्रूर खान को बुरा-भला कहने लगा.

युवा मछुआरा नाव के निचले हिस्से में लेटा हुआ था. उसे पता था कि वो ज़्यादा समय तक ज़िंदा नहीं रहेगा, क्योंकि वो समुद्र में और भी दूर जा रहा था.

आख़िरकार, क्षितिज पर एक द्वीप दिखा और ज्वार ने नाव को उसके किनारे तक पहुंचाया. जैसे ही वो रेत में उतरा, एक युवक पेड़ के पीछे से निकला. निश्चित रूप से, वो एक आश्चर्य था: क्योंकि वो लड़का देखने में बिल्कुल युवा मछुआरे जैसा ही लग रहा था. वे सेब के दो हिस्सों के समान थे.

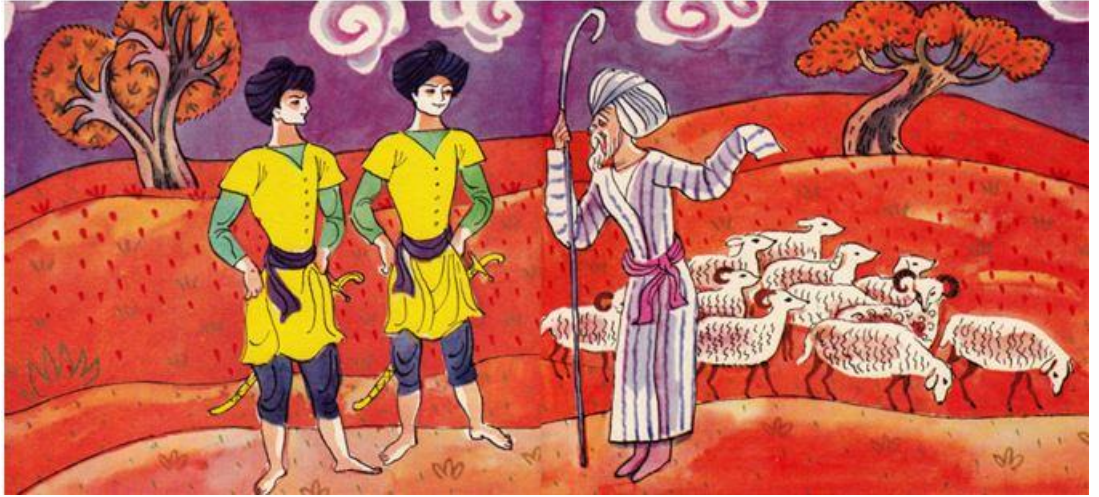

युवक नाव के पास आया और उसने युवा मछुआरे को खोला, जिसने उसे गले लगाया और उसकी दयालुता के लिए उसे धन्यवाद दिया. फिर युवक ने अपने थैले से एक रोटी निकाली, उसे दो हिस्सों में तोड़ा और आधी युवा मछुआरे को दे दी. वे दोस्त बन गए और जल्द ही दो भाइयों की तरह अविभाज्य हो गए.

एक दिन, जब दोनों युवक पैदल जा रहे थे, तो उनकी नज़र एक बूढ़े आदमी पर पड़ी जो अपने मवेशी चरा रहा था. लड़कों को हमेशा लगा था कि वे द्वीप पर केवल दो लोग थे, इसलिए वे बूढ़े का स्वागत करने के लिए उसके पास गए. फिर चरवाहे ने उन्हें यह कहानी सुनाई:

"तीन दिनों की यात्रा तुम्हें द्वीप के पार एक ऐसे देश में ले जाएगी जिसका खान सबसे ज्यादा दुखी है. उसकी इकलौती बेटी, दुनिया की सबसे खूबसूरत है, लेकिन उसने अपने जीवन में कभी एक शब्द भी नहीं बोला है. खान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जो उसकी बेटी को ठीक करेगा उसे बहुत मूल्यवान इनाम मिलेगा, लेकिन जो उसे ठीक करने की कोशिश में असफल रहेगा, उसका सिर काट दिया जाएगा. खान के महल में कई युवाओं ने इस तरह से अपनी जान गंवाई है."

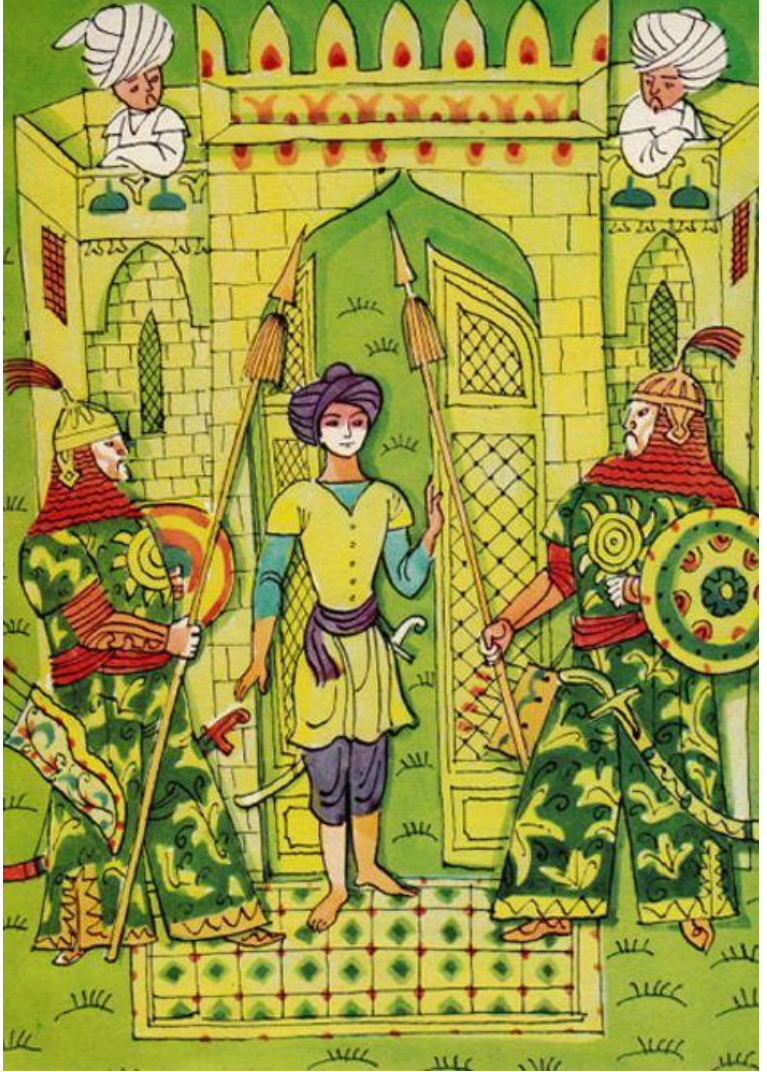

दोनों दोस्त उसकी कहानी से आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया. जब वे महल के द्वार पर पहुंचे, तो युवक ने युवा मछुआरे से कहा, “पहले मुझे कोशिश करने दो. अगर मैं खान की बेटी को ठीक करने में सफल हुआ तो मैं मिलने वाला उपहार तुम्हारे साथ साझा करूंगा.

युवा मछुआरा सहमत हो गया, और इस प्रकार युवक ने महल में प्रवेश किया.

दो नौकरानियों ने उनका स्वागत किया और कहा, "कई अच्छे युवाओं ने खान की बेटी को ठीक करने की कोशिश की है और असफल होने पर अपनी जान गंवाई है. सावधान रहना! नहीं तो तुम भी मौत के मुंह में जाओगे.”

लेकिन बहादुर युवक साहसपूर्वक राजकुमारी के कक्ष में दाखिल हुआ, और झुककर बोला, “सुंदर राजकुमारी, मेरी कहानी सुनो. मेरे पिता के तीन बेटे हैं. एक दिन हम जलाऊ लकड़ी लाने के लिए जंगल में गये. मेरे सबसे बड़े भाई ने एक शाखा को काटकर एक पक्षी बनाया जो इतना अद्भुत था कि ऐसा लग रहा था मानो वो जीवित हो. मेरा मंझला भाई जंगल में गया और कुछ दुर्लभ पंखों के साथ लौटा. उसने उन पंखों से लकड़ी के पक्षी को सजाया. फिर पक्षी और भी अधिक सुन्दर और सजीव लगने लगा. मुझे एक जादुई झरना मिला, और जब मैंने पक्षी को साफ पानी में नहलाया, तो फिर वो जीवित हो गया, उसने अपना गीत गाया और फिर वो उड़ गया.”

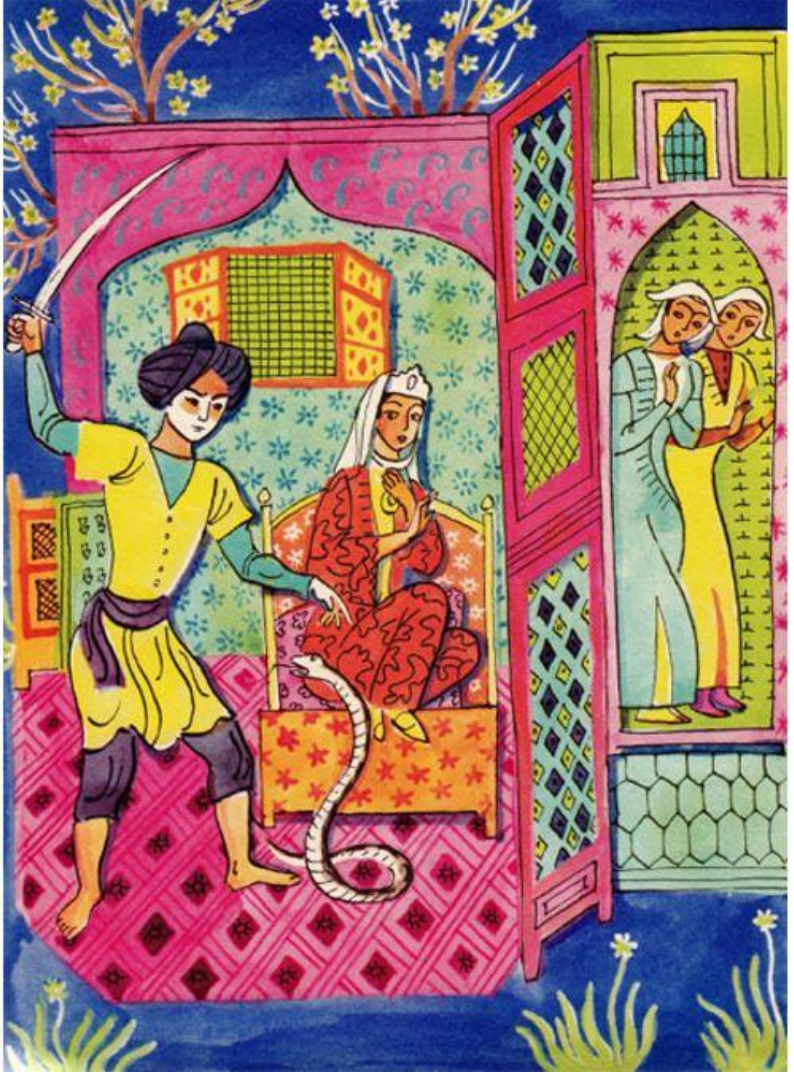

“फिर हममें आपस में बहुत बहस हुई, क्योंकि हम में से प्रत्येक कह रहा था कि वो पक्षी उसका था. मुझे नहीं लगता कि हम कभी भी बहस से किसी नतीजे पर पहुंच पाएंगे. मैं आपसे यह पूछने आया हूं कि आप तय करें कि हममें से कौन सही था. हममें से कौन पक्षी का सही मालिक था? आप ही हमें बताये."

युवा राजकुमारी उठ बैठी और उसकी लंबी काली पलकें कांपने लगीं. उसके होठों पर मुस्कान आई, लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं कहा. उसकी बजाए, उसने अपने मुंह पर उंगली रखी और अपना सिर हिलाया.

युवक बहुत गुस्सा हुआ और चिल्लाया, "अगर अब मुझे तुम्हारे कारण मरना है, तो मेरी इच्छा यह होगी कि तुम भी मेरे साथ ही मरो!" यह कहकर युवक ने अपनी तलवार निकाली और उससे हवा में ज़ोर से वार किया.

राजकुमारी आतंकित हुई. वो जमीन पर गिर पड़ी और चिल्लाने लगी. उसी क्षण उसके मुंह से एक सफेद सांप निकला. युवक ने उस पर वार कर उस सांप का सिर कुचल दिया.

उससे राजकुमारी की आंखों में आंसू भर आये. उसने अपनी उंगली से एक अंगूठी निकाली और कहा, "यह अंगूठी मेरे पिता के पास ले जाओ, और वो तुम्हें कुछ इनाम देंगे."

युवक ने अंगूठी ली और वो वहां भागा जहां उसका दोस्त उसका इंतजार कर रहा था. युवा मछुआरा अपने मित्र को गले लगाने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ा. युवक ने उसे वो सब बताया जो महल में उसके साथ घटा था और फिर उसने उसे वो अंगूठी सौंप दी.

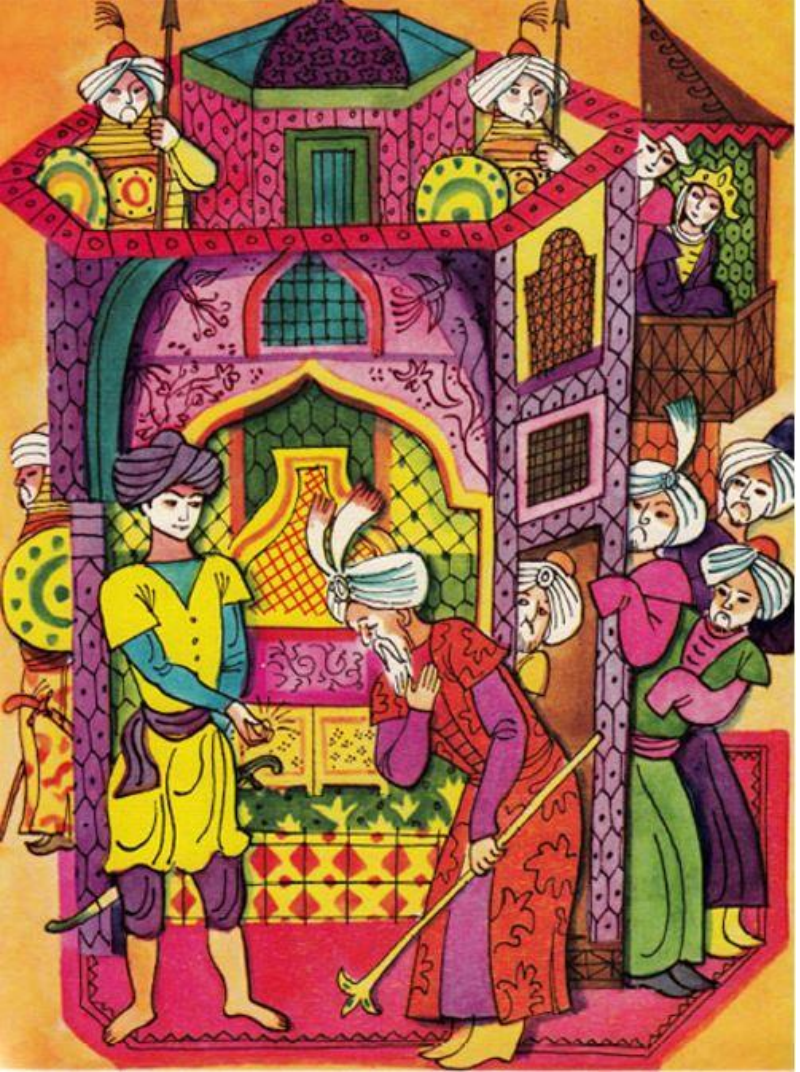

"अब मैं तुम्हें अपना रहस्य बता सकता हूं," युवक ने कहा. "मैं वही सुनहरी मछली हूं जिसके लिए तुम्हें दुःख महसूस हुआ था और जिसे तुमने जाल से बाहर जाने दिया था. जब तुम अपना काम करते समय गाते थे, तो तुम्हारे खूबसूरत गीतों की खबर मेरे पिता, समुद्र के राजा तक पहुंची थी. मैंने अपने पिता से विनती की कि वो मुझे पानी के किनारे तक तैरने और तुम्हारे गीत सुनने की अनुमति दें, लेकिन जब मैं ऐसा करने गया, तो मैं तुम्हारे गायन से इतना प्रभावित हुआ कि मैं जाल में फंस गया. और फिर तुमने मुझे आज़ाद कर दिया. जब दुष्ट खान के आदमियों ने तुम्हें बांधा और वो छोटी नाव में तुम्हें समुद्र में ले गए, तो मैंने अपने वफादार दोस्तों, मछलियों, को सहायता के लिए बुलाया और उनसे तुम्हारी छोटी नाव को उनकी पीठ का सहारा देने को कहा ताकि नाव पलट न जाए. मेरे वफादार दोस्तों ने मुझ पर वो उपकार किया और उन्होंने तुम्हारी नाव को उस द्वीप तक पहुंचाया.

"मैं वहां एक युवक के भेष में तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था जो असल में तुम्हारी ही छवि थी. तुम्हारे साथ बिताए थोड़े ही समय में मुझे पता चला कि तुम सचमुच में कितने अच्छे और दयालु हो. अब मैं तुम्हें एक भाई के रूप में प्यार करने लगा हूं. अब मेरे लिए समुद्र के नीचे अपनी भूमि पर लौटने का समय आ गया है. लो यह अंगूठी लो, खान के पास जाओ और वो इनाम प्राप्त करो जिसका उसने वादा किया था.

"यदि तुम्हें कभी मेरी आवश्यकता हो तो समुद्र के किनारे आना और मुझे लगातार तीन बार पुकारना. मैं हमेशा तुम्हारी सहायता के लिए आऊंगा."

इन शब्दों के साथ वो युवक अचानक एक चमचमाती सुनहरी मछली में बदल गया और चमचमाते समुद्र में गायब हो गया.

युवा मछुआरा उस स्थान को देखता रहा जहां उसका दोस्त गायब हुआ था और फिर वो उदास होकर महल की ओर चल दिया.

महल के अंदर बूढ़े खान ने युवा मछुआरे को झुककर प्रणाम किया और कहा, "तुम्हारा इनाम मेरे पास का सबसे कीमती खजाना है - मेरी आंखों की रोशनी, मेरी इकलौती बेटी. वो तुम्हारी पत्नी बनेगी और तुम सदैव सुखी रहोगे."

खान के एक नौकर ने युवा मछुआरे को सोने का एक बढ़िया वस्त्र लाकर दिया जो मोतियों और माणिकों से जड़ा हुआ था.

अगले दिन युवा मछुआरे और खान की बेटी की शादी हुई. भव्य विवाह के भोज में लोगों ने संगीत का आनंद लिया और खूब मौज की.

युवा राजकुमारी ने जल्द ही देखा कि उसका पति अक्सर उदास रहता था और दुखी आहें भरता था. एक दिन उसने उससे प्यार से पूछा कि वो किस बात से इतना दुःखी था.

"पता कि कि मैं तुम्हें कैसे बताऊं," उसने कहा, "यहाँ महल में वो सब कुछ है जो कोई कभी भी चाह सकता है. यहां पर खुशी की हर चीज़ मौजूद है. लेकिन मुझे आलस्यपूर्ण जीवन जीने की आदत नहीं है. मेरे हाथ हमेशा काम में व्यस्त रहते थे. जब मेरे पास करने के लिए कोई काम नहीं होता है तो मैं बेचैन हो जाता हूं.

"मैं यहां से बहुत दूर एक सुनहरे, रेतीले तट पर पला-बढ़ा था. मेरे पिता, जिनसे मैं बहुत प्यार करता था, अब वहां बिल्कुल अकेले रहते हैं. वो बूढ़े हो गए हैं, और अब उनकी मृत्यु बहुत दूर नहीं होगी. अगर तुम मेरे साथ मेरे पिता के घर वापस चलोगी, तो मैं दुनिया का सबसे खुश आदमी होऊंगा. लेकिन मैं तुम्हें यह भी बताना चाहता हूं कि तुम मेरे देश में एक खान की बेटी की तरह विलासिता में नहीं रह पाओगी, जहां नौकरानियां तुम्हारा इंतजार करती होंगी. वहां तुम सिर्फ एक गरीब मछुआरे की पत्नी बन कर रह सकोगी."

"मैं तुम्हें खुश करने के लिए कुछ भी करूंगी, क्योंकि अगर तुम खुश होगे, तभी मैं भी खुश रहूंगी." राजकुमारी ने कहा, "लेकिन हम समुद्र कैसे पार कर सकते हैं? यहां कोई नाव बनाना नहीं जानता है."

"हम उसका कोई रास्ता ज़रूर खोज लेंगे. इस बीच, तुम यात्रा की तैयारी शुरू करो."

जब राजकुमारी यात्रा की तैयारी करने के लिए निकली, तो उसका पति समुद्र के किनारे गया और वो लगातार तीन बार जोर से चिल्लाया. तुरंत सुनहरी मछली सतह पर आई और बोली:

"तुम मुझसे क्या चाहते हो, मेरे वफादार दोस्त?"

"मुझे घर की बहुत याद आती है. मैं अपने वतन वापस जाना चाहता हूं और अपने पिता से मिलने जाना चाहता हूं जिन्हें मैं बहुत प्यार करता हूं. लेकिन हमारे पास समुद्र पार करने के लिए न तो नाव है और न ही कोई जहाज, और मेरी पुरानी नाव टूट गयी है."

"तुम्हारी इच्छा पूरी होगी. जैसे ही रात होगी, मैं तुम्हें बिना किसी डर के वापिस भेज दूंगी, और तुम सुबह तक अपने घर वापिस पहुंच जाओगे.

"लेकिन अगर समुद्री मछली हमें निगलने की कोशिश करेगी तो क्या होगा?"

"उससे बिल्कुल मत डरना. उसका रूप भयानक होगा, लेकिन वो एक दयालु आत्मा है. अब मुझे तुम्हें छोड़कर जाऊंगी. अलविदा, तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो." फिर एक क्षण बाद सुनहरी मछली लहरों के नीचे चली गई.

रात हुई. अचानक, समुद्र तूफानी हो गया और एक विशाल मछली राक्षस तैरकर किनारे पर आया. उसके सिर के शीर्ष के ब्लो-होल से पानी का एक फव्वारा फूट पड़ा. उसने अपनी पूंछ धीरे-धीरे हिलाई जिससे समुद्र में विशाल लहरें उठने लगीं और चारों ओर टकराने लगीं, क्योंकि वो वास्तव में एक विशाल मछली थी.

जब राजकुमारी ने राक्षस को देखा तो वो कांपने लगी, लेकिन उसके पति ने उसके डर को शांत किया, उसका हाथ पकड़ा और उसे सीधे मछली के मुंह में ले गया. जैसे ही वे अंदर पहुंचे, मछली ने अपना मुंह बंद कर लिया और वो समुद्र के पार चली गयी.

वो इतनी सहजता और सावधानी से तैरी कि उसके शरीर के हिचकोलों ने जल्द ही युवा जोड़े को सुला दिया.

सुबह तक जादुई मछली समुद्र पार कर चुकी थी. आख़िरकार उसने तैरना बंद कर दिया और अपना मुंह खोल दिया.

सूरज की गर्म किरणें युवा मछुआरे पर पड़ीं और उनसे वो जागा. उसने अपनी आंखे खोलीं और अपने पैतृक तट को देखा. उसने वो पुरानी झोपड़ी देखी जिसमें वो पैदा हुआ था जहां पास में ही उसके प्यारे पिता अकेले बैठे थे.

युवा मछुआरा वास्तव में चकित था, लेकिन वो बहुत खुश भी था, और इसमें कोई आश्चर्य नहीं था, क्योंकि अंत में वो दुबारा अपने घर पहुंच गया था.

वो दौड़कर अपने पिता के पास गया और उसने उन्हें गले लगाया, और फिर उन्हें अपनी युवा पत्नी से मिलवाया.

वो दिन उसके लिए सबसे आनन्द का दिन था!

तब से वे तीनों अपनी ही जमीन पर एक छोटी सी मछुआरे की झोपड़ी में खुशी-खुशी रहने लगे.